इस क्षेत्र में शिक्षा के विकास के लिए केन्द्रीय विद्यालय, डिग्री कालेज स्थापित होने चाहिएं। इस क्षेत्र के आर्थिक व सामाजिक विकास के लिए शाहजहांपुर कटरा हो कर दातागंज, बिनावर, बदायूं व बजीरगंज और चंदौसी को जोड़ने वाली बड़ी रेलवे लाइन की आवश्यकता है। फरीदपुर और दातागंज को जोड़ने के लिए रामगंगा पर पुल बनाना भी जरूरी है।

इस क्षेत्र के कृषि उत्पादन का सही उपयोग नहीं हो पाता। फरीदपुर दातागंज एवं आंवला में चीनी कारखाना स्थापित होना चाहिए और सूती कताई मिल, कागज फैक्टरी, तिलहन का कारखाना बनाना जरूरी है। इंजीनियरिंग तथा मेडिकल कालेज भी बनाना जरूरी है। आंवला संसदीय क्षेत्र के विकास खण्ड में सड़कें बनाने की व्यवस्था की जाए। जिन गांवों में लोग सरकारी नलकूपों द्वारा सिंचाई करना चाहते हैं उन गांवों में अविलंब सरकारी नलकूप लगवाए जाएं। प्रत्येक वर्ष रामगंगा नदी में बाढ़ आ जाती है जिससे बहुत अधिक बरबादी होती है। गंगा और राम गंगा के तट पर ऊंचा बांध बनवा कर उनके किनारे वृक्षारोपण कर बांध के ऊपर पक्की सड़क बना दी जाए।

सरकार का ध्यान उपरोक्त समस्या की ओर विशेष रूप से दिला रहा हूं और आशा करता हूं कि आंवला क्षेत्र के विकास के लिए केन्द्र व राज्य सरकार अविलंब कदम उठावेंगी।

(vii) *Measure to check water pollution of Rushikulya river from effluents of Jayashri Chemicals Ltd.*

SHRI CHINTAMANI PANIGRAHI (Bhubaneswar) : The ecological condition of Ganjam district in Orissa is alarmingly deteriorating on account of the bad affects of air pollution due to discharge of chlorine gas by M/s. Jayashri Chemicals Ltd.

Jayashri Chemicals Ltd., a heavy Chemical Industry has been discharging affluents in the River Rushikulya and emitting chlonine gas into the air, polluting the atmosphere of the locality, thereby adversely affecting the general welfare and prosperity of the people as well as causing numerous bealth hazards. The plant has been the cause for the economic loss of production, decreasing in the fish catch in river.

Several representations have been made by the Public to the State Government and the Centre during the last 15 years. But no remedial measures have been undertaken to check the environment pollution so far. The inorganic mercury released from the plant producing caustic soda was converted in the sea into mythyl mercury. This entered the system of those who ate sea-food and caused the horribly wasting disease. Mercury pollution has also been detected in the Rushikulya river.

In view of the above conditions, the people of Ganjam district feel suffocated both mentally and physically. Unless immediate measures are taken to check the pollution the whole district of Ganjam will be polluted.

This is a question of life and death for the people of the entire district. Moreover, the dreaded diseases which are spreading to the neighbouring districts cannot be brought under control if timely steps are not taken.

As such, I demand that the Government of India should direct the authorities concerned to take immediate action to check pollution and M/s. Jayashri Chemicals Ltd. should be advised to take all possible protective measures without further loss of time.

(viii) *Problems of Labourers of Rori Ashestor Mines Chailiasa Distt. Singhbhumi (Bihar)*

श्रीमति कृष्ण साहि (बेगूसराय) : हैदराबाद एस्बेस्टास सिमेंट प्राडक्ट्स द्वारा बिहार के सिंहभूमि जिले के चाइबासा में रोरी

एस्बेस्टास खान का संचालन किया जा रहा है। 2000 फीट की ऊंचाई पर स्थित इस खान से प्रतिवर्ष 4 से 5 लाख मी० टन एस्बेस्टास निकाला जाता है जो देश का सर्वोत्तम एस्बेस्टास है।

परंतु इस खान में काम करने वाले 1500 आदिवासी श्रमिकों के लिए यह खान घातक साबित हो रही है। जब मजदूरों के संगठन यूनाइटेड माइन्स वर्कर्स यूनियन ने इस बात की जांच कराने की मांग की तो आठ मजदूरों को बर्खास्त कर दिया गया। मजदूरों को सिर्फ 7 से 10 रूपया दैनिक मजदूरी दी जाती है। उन्हें न आवास की सुविधा उपलब्ध है और नही पहाड़ी के ऊपर स्थित खान में पहुंचने के लिए किसी भी प्रकार के परिवहन की सुविधा। उनको बिजली भी नहीं दी गई है। उनके लिए कोई कल्याणकारी कार्यक्रम नहीं चलाया गया है। खान के अस्पताल में न तो एक्स-रे मशीन है और न वैज्ञानिक जांच की कोई अन्य सुविधा।

केवल इस खान में काम करने वाले मजदूरों की ही बात नहीं, इस खान की वजह से आसपास के आदीवासी गांवों के निवासियों के स्वास्थ्य को भी खतरा उत्पन्न है। खान के पास ही क्रशर प्लांट लगा हुआ है जिसमें कच्चा एस्बेस्टास तोड़ा जाता है। एस्बेस्टास को इस संयंत्र के पास खुले आसमान के नीचे रखा जाता है। खान और क्रशर संयंत्र से निकलने वाली धूल खान क्षेत्र और आसपास के आदीवासी गांवों में पहुंचती है जिससे अधिकाश आदिवासी लोग टी० बी० एवं कैंसर के शिकार होते हैं। देश के अन्य भागों में स्थित सभी सीमेंट और एस्बेस्टास काखानों में धूल से होने वाली स्वास्थ्य संबंधी हानि को रोकने के लिए थर्मल प्रिसिपिटेटर लगाए गए हैं जबकि रोरी खान में ऐसी एहतियाती व्यवस्था नहीं की गई है।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आई एल ओ) के राबर्ड जान हैमिल्टन तथा सहायक महा निदेशक (खान), डा. बी. के. सेनगुप्त द्वारा यहां पर एक सर्वेक्षण किया गया। इससे भी स्पष्ट पता चला है कि खान से न सिर्फ खान में काम करने वाले मजदूरों को ही बल्कि आसपास के गांवों के अदिवासी लोगों के जीवन को भयंकर खतरा है। लेकिन इस रिपोर्ट पर कोई कार्यवाही अभी तक नहीं की गई है।

13.25 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS, 1983-84 - *contd.*

Ministry of Commerce and Department of Supply - contd.

MR. DEPUTY SPEAKER : Now, we take up Demands for Grants relating to the Ministry of Commerce and Department of Supply. Shri Vyas was on his legs.

श्री गिरधारी लाल व्यास (भीलवाड़ा) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं मिटको के बारे में जिक्र कर रहा था। मिटको के अधिकारी बड़े-बड़े पूंजीपतियों से मिले रहते हैं और उनका सामान खरीदते हैं। जो गरीब लोग खान चलाते हैं, उनका सामान खरीदने वाला कोई नहीं है। इसीलिए, मैंने कहा था कि दस हजार मजदूर भीलवाड़ा जिले में मिटको की वजह से बेकार हो गए हैं। हमारी सरकार और हमारी नेता श्रीमति गांधी की जो मंशा है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को एम्पलायमेंट दिया जाए, वह पूरी नहीं होगी। लेकिन यह संस्था इस प्रकार से गड़बड़ी करके लोगों की रोजी-रोटी छीन रही है। इस प्रकार की अव्यवस्था की ओर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए। मैंने शुक्रवार